प्रबन्धन

जिन दिनों हम ऑस्ट्रेलिया में रह रहे थे, एक परिवार मसीही बना जो कुछ समय तक विश्वासी रहा, परन्तु वेकेशन बाइबल स्कूल के बाद उस परिवार ने आराधना में आना बन्द कर दिया। जब हमने उनसे पूछा कि उन्होंने आराधना में आना बन्द ज़्यों कर दिया है, तो उनका उज़र था, ''जब हमने पहले आपके साथ आराधना करनी आरज़्भ की थी, तो हमने सोचा था कि आप मसीही लोगों का एक छोटा सा समूह है जो परमेश्वर की सेवा करने की कोशिश कर रहा है। वीबीएस (वीडियो बाइबल स्कूल) में हमने महसूस किया कि आप तो साहित्य, ज़्लासों, शिक्षकों, समयसारणी और सब तरह से संगठित लोग हैं। हमने ऐसा नहीं सोचा था।''

संगठित होना किसी भी तरह बाइबल की शिक्षा के विरुद्ध नहीं है। सृष्टि की रचना का वर्णन संगठन की ही बात करता है जिसमें परमेश्वर ने छह दिनों का इस्तेमाल किया था। प्रत्येक दिन की रचना इस आधार पर की गई थी कि पहले ज़्या बनाया गया है और उसके बाद ज़्या बनाया जाएगा। बाइबल में हमें दूसरे उदाहरण भी मिलते हैं: जब इस्राएली लोग सीनै से प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर जाने को तैयार थे, तो उन्हें विस्तृत निर्देश दिए गए थे कि उन्हें यात्रा के लिए कैसे संगठित होना है (गिनती 1-10; प्रेरितों 6:1-6 भी देखिए)।

ज़्योंकि परमेश्वर ने संगठित योजना का इस्तेमाल किया, इसलिए जब कोई कलीसिया अपने लक्ष्यों के कार्य को पूरा किए बिना एक से दूसरी समस्या में उलझ जाती है, तो परमेश्वर खुश नहीं होता। लक्ष्यों को पूरा करने के लिए व्यवस्था करना ही प्रबन्धन है। प्राचीनों सहित कलीसिया के अगुओं को जिनमें वे दूसरे लोग भी शामिल हैं जिन्हें कलीसिया की विभिन्न सेवकाइयों का कार्यभार सौंपा जा सकता है, में प्रबन्धन के गुण होने आवश्यक हैं। 1 तीमुथियुस 3:4, 5 एक प्राचीन या ऐल्डर की योग्यता के रूप में व्यवस्था पर ज़ोर देता है: ''अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और लड़केबालों को सारी गज़्भीरता से आधीन रखता हो। (जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली ज़्योंकर करेगा?)।''

इस पाठ में चार गुणों अर्थात योजना, व्यवस्था, प्रबन्ध और मूल्यांकन करने पर चर्चा की गई है।

योजना

कलीसिया के लक्ष्य को निर्धारित करने के बाद लेकिन उन लक्ष्यों को पूरा करने का

कार्य आरम्भ करने से पहले, कलीसिया के अगुओं को मण्डली के कार्य से सम्बन्धित योजनाओं पर विस्तार से ध्यान देना चाहिए।

व्यापारी बहुत पहले से ही योजना बना लेते हैं; क्या प्रभु के कार्य जिसे ''संसार का सबसे बड़ा कार्य'' कहा जाता है, में शामिल लोगों को भी भविष्य के लिए योजनाएं नहीं बनानी चाहिए? बिना योजना के किसी मण्डली की अगुआई करना नज़्शा देखे बिना या यह जाने बिना कि लक्ष्य अर्थात मंज़िल तक कैसे पहुंचना है, यात्रा के लिए निकलने जैसा है। बाइबल के उदाहरणों का इस्तेमाल करना, पूरा करने के लिए सामान बनाने परन्तु पूरा सामान न होने की तरह या विजयी होने के लिए पर्याप्त सैनिकों के बिना युद्ध में जाने की तरह है (लूका 14:28-32)।

लक्ष्यों को प्राप्त करना

योजना में शामिल लोगों को हर समय कलीसिया के लक्ष्यों को दिमाग़ में रखना चाहिए। जो भी योजना बनाई गई हो उससे किसी न किसी प्रकार कलीसिया के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोग मिलना चाहिए।

स्पष्टतया, लक्ष्य निर्धारित करने, योजना बनाने में और विशेष रूप से कार्य निर्धारित करने या लक्ष्यों को आसान बनाने और योजना बनाने में काफी करीबी सम्बन्ध पाया जाता है। दोनों में अन्तर यही है कि योजना में विशेष विवरण होते हैं जिनके द्वारा लक्ष्य प्राप्त किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि यह निर्णय लिया जाता है कि ''प्रत्येक आगंतुक के घर जाया जाएगा,'' तो वह एक ''कार्य का लक्ष्य'' बन जाता है। इसे कैसे पूरा किया जाए? योजना में ऐसे प्रश्नों का उज़र होगा जैसे ''हम आगंतुकों का नाम कैसे निकालेंगे और उनके घर जाने का समय कैसे लेंगे?''; ''उनके घर कौन जाएगा?'' और ''कब जाएगा?''

मण्डली की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करना

योजना में *एक विशेष मण्डली की* सम्भावनाएं, लक्षण, समस्याएं और विशेष अवसर शामिल होते हैं। कई बार, कलीसिया के अगुवे इस बात पर विचार किए बिना कि किसी दूसरे की योजनाएं उनकी स्थिति में प्रभावी होंगी भी या नहीं, दूसरी मण्डलियों के कार्यक्रमों की ही नकल करते हैं। उदाहरण के लिए अमेरिका के बाहर की कलीसिया के अगुओं को अहसास होना चाहिए कि अमेरिका में इस्तेमाल होने वाले कई कार्यक्रम सुधार किए बिना बहुत से दूसरे देशों के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

परिणामों को पहले से देखना

अगुओं को चाहिए कि जहां तक सम्भव हो सके अपनी योजना के परिणामों का पहले से ही मूल्यांकन कर लें। बहुत सी योजनाओं में कठिनाई आती है, इसलिए नहीं कि वे उस काम को करने में असफल होते हैं जो वे करना चाहते थे, बल्कि इसलिए कि उनसे अपेक्षित परिणामों के प्रति प्रभावी परिणाम भी मिलते हैं। यदि मण्डली के अगुवे अपनी किसी योजना

के परिणामों का पहले ही मूल्यांकन कर लें, तो उस परिणाम से निकलने वाली भलाई को बढ़ाकर किसी भी दूसरे प्रकार के दुष्प्रभाव को कम करने का प्रयास किया जा सकता है।

व्यवस्था करना

योजनाएं बन जाने के बाद, कलीसिया के अगुओं को चाहिए कि ऐसी व्यवस्था करें जो उन योजनाओं को लागू करने के लिए आवश्यक हो।

''इसे - सरल - रखें'' का नियम

अगुओं को चाहिए कि कार्य की व्यवस्था करते हुए वे ''इसे - सरल - रखें'' के नियम को अर्थात कलीसिया में, जितना छोटा संगठन हो उतना ही अच्छा है, याद रखें। यदि कलीसिया का संगठन ही संतोषजनक ढंग से काम कर रहा है, तो इसे चलने दें। प्रेरितों 6 अध्याय से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जब कोई कार्य रुक गया हो या संतोषजनक ढंग से न हो रहा हो तो उसकी व्यवस्था की जानी आवश्यक है।

''इसे - सही - करें'' का नियम

यदि मण्डली के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित कार्यक्रम की आवश्यकता है, उदाहरण के लिए किसी के घर जाकर मिलने का कार्यक्रम हो, तो एक और नियम लागू होता है कि ''यदि ऐसा करना आवश्यक है, तो इसे सही ढंग से करना उचित है।''

अगुओं को चाहिए कि वे अग्रिम योजना व तैयारी में लग जाएं। किसी कार्यक्रम की परिकल्पना एवं उसके कार्यान्वयन के लिए सावधानीपूर्वक योजना और तैयारी के लिए समय देना भी आवश्यक है। पहले से ही समयसारणी बनाना बुद्धिमज़ा होगी जिससे किसी घटना की उल्टी गिनती और यह संकेत देने के लिए कि उसकी तैयारी कौन सी तारीख को पूरी होगी, निर्धारित करना आसान होता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी कलीसिया ने कोई सुसमाचार सभा आयोजित करनी है, तो समयसारणी में वज़्ता को बुलाने और सभा की तिथियां एक साल पहले ही निर्धारित करने, तीन माह पहले ही उसे लोगों को बताने और विशेष प्रार्थनाएं करने, लोगों से मिलने और सभा से एक माह पहले विज्ञापन देना आरज़्ज़ करना शामिल हो सकता है। इस समयसारणी में उन सभी ज़िज़्मेदार लोगों के नाम भी दिए जा सकते हैं जिन्हें अलग - अलग काम सौंपे गए हों।

जो भी कार्यक्रम हो उसे सफल बनाने के लिए, प्रोमोशन, विज्ञापन आदि देना भी आवश्यक है। सदस्यों को साथ लेने के लिए किए जाने वाले प्रयासों को प्रोमोशन कहा गया है। सार्वजनिक घोषणाओं, विशेष प्रवचनों व पाठों, चर्च के बुलेटिनों, साइन - बोर्डों, पत्रों आदि के द्वारा कार्यक्रमों को प्रोमोट किया जा सकता है। हमें अच्छा लगे या न लगे, परन्तु प्रोमोशन आवश्यक है।

किसी कार्यक्रम के लिए विज्ञापन का प्रबन्ध समाचार पत्रों, रेडियो, टेलीविजन आदि स्थानीय मीडिया के माध्यम से किया जा सकता है। समाचार मीडिया आम तौर पर समाज

में होने वाली भावी घटनाओं और कलीसियाओं के बारे में जानकारी छापने के लिए तैयार रहता है। समय निकालकर किसी योग्य व्यक्ति को समाचार की कहानियां तैयार करके उन्हें छपवाने को मीडिया को देने के लिए नियुक्त किया जा सकता है।

कलीसिया के कार्यक्रमों के बारे में लोगों को जानकारी देने और उन्हें इसका लाभ उठाने के लिए उत्साहित करने पर खर्च किया गया धन विज्ञापन की मदद से जुड़ा है। कलीसिया के अगुओं को इस बात का भी अहसास होना चाहिए कि, दीर्घकाल में, ''प्रभावशाली विज्ञापन महंगा नहीं पड़ता, बल्कि इसका लाभ ही होता है।''

आवश्यकता के अनुसार संगठन उपलब्ध कराना अगुओं की ज़िम्मेदारी है। पहले तो उन्हें यह तय कर लेना चाहिए कि कितना बड़ा संगठन आवश्यक है। प्राचीनों का काम केवल निगरानी करना ही हो सकता है। उसके बाद संगठन का काम सम्भवतया यह देखना होगा कि कोई कार्यक्रम प्रभावशाली ढंग से होता है या नहीं। जिस व्यक्ति के पास उस कार्यक्रम की ज़िम्मेदारी होगी उसे अन्य बातों के साथ नीचे दी गई बातें भी माननी पड़ेंगी: किए जाने वाले कार्यक्रम के लिए जो भी सबसे कुशल और योग्य ढंग हो वही अपनाया जाना चाहिए। कार्यक्रम में सहायता करने वाले लोगों को शामिल कर शिक्षित करें। स्टाफ मीटिंगों का समय तय करें। इसकी समाप्ति पर यह जानने के लिए कि कार्यक्रम सफल रहा या नहीं, उसके प्रारम्भ से भी पहले मूल्यांकन करने के ढंग को निर्धारित कर लिया जाए।

हर मसीही को उन्नमता के लिए प्रयास करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए। किसी काम के अगुवे यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि इसे श्रेष्ठ माना जाए या नहीं। यदि मण्डली सुसमाचार सभा करने की योजना बना रही है, तो उन्हें चाहिए कि जिस भवन में यह सभा हो वह बहुत ही अच्छी हालत में हो, संदेश तथा गाना बहुत अच्छा हो और अपने बजट के अुनसार अच्छे से अच्छा विज्ञापन दिया जाए। हर कोई श्रेष्ठता को ही सराहता है। शायद इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि, जब भी परमेश्वर के लोगों ने उसके पास बलिदान भेंट किया, उसने ''सबसे अच्छी'' भेंट ही चाही है। क्या आज कलीसिया के लिए हमें ''सबसे अच्छा'' काम करने का प्रयास नहीं करना चाहिए?

प्रबन्ध करने वाले अन्त को पहले से ही देख सकते हैं। कार्यक्रम तैयार करने वालों को इस बात से अवगत होना आवश्यक है कि कार्यक्रम कमजोर हो सकते हैं और मर भी सकते हैं। जब कोई मण्डली हिचकिचाते हुए कोई प्रयास करना बंद कर देती है, तो उसका परिणाम असफलता और निराशा की भावना ही होता है।

क्या इससे अच्छा ढंग कोई और भी है? दो सुझाव हैं जो अगुओं के लिए सहायक सिद्ध हो सकते हैं: (1) कार्यक्रम को चलते रहने देने के बजाय अस्थाई बनाते हुए उसके अन्त के लिए योजना बनाएं (2) याद रखें कि कोई भी कार्यक्रम पवित्र नहीं है। मनुष्य के ''कार्यक्रमों'' की तुलना परमेश्वर के वचन से न की जाए। यदि एक विचार काम नहीं करता है, तो मण्डली बिना किसी असफलता या निराशा की भावना के उस कार्यक्रम को छोड़कर किसी दूसरे की कोशिश कर सकती है। आम तौर पर, मण्डलियां समय-समय पर अपने कार्यक्रमों को बदलने, उनमें से कुछ निकालने, या जोड़ने या उनमें दोहराने की

आशा कर सकती हैं।

व्यवस्था करना

प्रभु की कलीसिया में एक बार किसी काम की योजना बनने और उसका प्रबन्ध हो जाने के बाद, किसी न किसी को यह सुनिश्चित करना पड़ेगा कि यह काम हो गया है: इसी को कार्यक्रम की ''व्यवस्था करना'' कहते हैं।

प्राचीनों के लिए सबसे अच्छा विचार कार्यक्रमों का वास्तविक प्रबन्ध दूसरों के हाथ सौंपना है, ताकि वे इससे अधिक महत्वपूर्ण बातों अर्थात प्रार्थना, वचन की सेवकाई और दूसरी आत्माओं की सज़्भाल पर ध्यान लगा सकें। परन्तु, कई बार प्राचीनों में विशेष गुण, रुचियां या विशेष क्षेत्रों में शिक्षा देने की योग्यता हो सकती है। उदाहरण के लिए, बाइबल स्कूल के सज़्बन्ध में या मिशनों या प्रचार और शिक्षा के सज़्बन्ध में (1 तीमुथियुस 5:17) या निर्माण से जुड़ी योग्यताओं में, जिससे वे विशेष कार्यक्रमों का कार्यभार सज़्भालने के लिए एक स्वाभाविक पसन्द बन जाते हैं। इन मामलों में, एक प्राचीन या ऐल्डर प्रत्यक्ष रूप से कोई विशेष कार्य कर सकता है, इसलिए नहीं कि वह एक प्राचीन है बल्कि इसलिए कि परमेश्वर ने उसे वह काम करने की क्षमता दी है।

अधिकार सौंपने का महत्व

सामान्य रूप से, जो लोग कलीसिया की अगुआई करते हैं उन्हें विभिन्न कार्यक्रमों के लिए सदस्यों को आगे ज़िज़्मेदारी सौंप देनी चाहिए। ऐसे अधिकार सौंपने से अगुओं पर छोटी-छोटी बातों को याद रखने का बोझ नहीं पड़ता; वे उन विशेष कामों पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं जो परमेश्वर ने उन्हें दिए हैं। जब यिथरो ने देखा कि उसका दामाद मूसा सुबह से शाम तक लोगों का न्याय करता रहता है, तो उसने कहा, ''जो काम तू करता है वह अच्छा नहीं। और इससे तू ज़्या, वरन ये लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय हार जाएंगे, ज़्योंकि यह काम तेरे लिए बहुत भारी है; तू इसे अकेला नहीं कर सकता'' (निर्गमन 18:17, 18)। फिर उसने मूसा को सहायता के लिए दूसरे लोगों को नियुज़्त करने की सलाह दी, ताकि न्याय करने का कुछ काम हस्तांतरित किया जा सके (प्रेरितों 6:3, 4)। इस प्रकार प्रतिनिधित्व देने से अगुओं के साथ - साथ सदस्यों को भी उन सेवकाइयों में अपनी योग्यताओं का इस्तेमाल करने का लाभ मिलता है जिनमें वे अच्छा काम कर सकते हैं। ऐसा ठीक ठाक होने पर या प्रतिनिधित्व देने से किया जाने वाला काम पहले से ज़्यादा और संतोषजनक ढंग से हो सकता है। प्रतिनिधित्व देने से आम तौर पर समस्याएं सुलझ जाती हैं।

प्रतिनिधित्व देने के ''नियम''

प्रतिनिधित्व देने के महत्व को सुनिश्चित करने के लिए, कलीसिया के अगुओं को इन सुझावों का पालन करना चाहिए।

सही कामों के लिए सही लोगों के जोड़ को ध्यान में रखकर, बुद्धिमज़ापूर्वक प्रतिनिधित्व

दें। योग्य या सक्षम लोगों को ही चुनना चाहिए अर्थात किसी विशेष काम पर विशेष योग्यताओं वाले लोगों को ही लगाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि *भरोसेमंद; ईमानदार; परिश्रमी* और सबसे बढ़कर *आत्मिक लोगों* को ही चुनें, जो दिए जाने वाले काम को वफ़ादारी से पूरा कर सकें। कलीसिया में नेतृत्व का कोई भी पद इतना सांसारिक नहीं है कि उसे ऐसे लोगों को सौंपा जाए जो मसीह को समर्पित हों।

काम को पूरा करने के लिए आवश्यक शिक्षा उपलब्ध करवाएं। सही लोगों को चुनने का कुछ भाग ऐसे लोगों को नियुक्त करना है जो पहले से ही उस विशेष क्षेत्र में शिक्षित हैं या योग्य हैं। यदि उन्होंने पहले से ही कोई ट्रेनिंग ली हो, तो भी उन्हें और ट्रेनिंग लेने के लिए उत्साहित करके उनकी सहायता करें। उदाहरण के लिए, यूथ लीडरों, बाइबल स्कूल के शिक्षकों और शिक्षा पाने के लिए अन्य मसीहियों को समझाने के लिए खर्च उठाने के लिए कलीसिया की सहायता करें।

कलीसिया के अगुओं का लक्ष्य कलीसिया का काम करने के लिए दूसरों को शिक्षा देकर अनिवार्य (अत्यावश्यक स्थान पर) बनना है। तीमुथियुस को दिए गए पौलुस के निर्देश सब तरह के सेवकों पर लागू हो सकते हैं: ''और जो बातें तू ने ... मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों'' (2 तीमुथियुस 2:2)। ''जो कुछ तुमने सलाह देने के बारे में ... या बाइबल स्कूल का निर्देशन करने ... या सिखाने ... या खज़ानची के रूप में काम करने ... या विश्वासी लोगों को सिखाने के बारे में सीखा है, ताकि वे इसे करने और वैसे ही दूसरों को सिखाने के योग्य हो जाएं।'' इस ढंग से, कलीसिया बनी रहेगी और विकास करती रहेगी।

स्पष्ट पैरामीटर, पर्याप्त धन और योग्य अधिकारी उपलब्ध कराएं। दूसरों को दिया जाने वाला काम स्पष्ट रूप से समझा देना चाहिए। फिर उस काम को करने के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध करवाएं और नियुक्त लोगों को प्रत्येक कार्यक्रम को पूरा करने के लिए पर्याप्त ''अधिकार'' दें। निश्चित सीमाओं में, जिस व्यक्ति को कोई काम करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है उसे निर्णय लेने, सामग्री खरीदने और सामान्यतया, अपनी योग्यता का भरपूर उपयोग करने का अधिकार दिया जाए। बिना अधिकार के ज़िम्मेदारी सौंपने का अर्थ असफलता होगा।

निगरानी रखें। अधिकतर मामलों में कार्य के वास्तविक कार्यक्रमों की निगरानी कोई दूसरा ही कर रहा है लेकिन ''निगरानी करने वालों की निगरानी करना'' मण्डली के अगुओं अर्थात ऐल्डरों (यदि वे ऐल्डर हैं) की ज़िम्मेदारी ही है। किसी को काम करने के लिए देने का अर्थ यह नहीं है कि उसे कोई कार्यक्रम सौंप दिया जाए और बाद में उसे दोबारा पूछा भी न जाए। बल्कि ज़िम्मेदारी देकर, जानकारी लेते रहें कि कब ज़्या हो रहा है। विभिन्न प्रकार से रखवाली करने वाले की सहायता के लिए तैयार रहें: उदाहरण के लिए, उसे उत्साहित करने, समझाने, या सुधारने के लिए। जो भी बिनती की जाती है, उसे इस प्रकार देने का प्रयास करें जैसे आप उसके प्रश्नों का उज़र देते हैं, उसमें जोश फिर से भरते हैं, उसका विश्वास दृढ़ करते हैं, उसमें विश्वास पैदा करते हैं और उसमें आत्मविश्वास जगाते हैं।

निगरानी या रखवाली करने वाले से अच्छा व्यवहार करते हुए, एक नमूना बना दें कि उसे उन लोगों से कैसे व्यवहार करना चाहिए जो उसके अधीन काम करते हैं।

जवाबदेही मांगें। जहां जिम्मेदारी होगी वहां जवाबदेही भी होगी। जिन लोगों को कार्यक्रम करने का अधिकार दिया जाता है उन्हें कलीसिया द्वारा जवाबदेह भी ठहराया जाना चाहिए कि उन्होंने कोई काम किया भी है या नहीं और उसे कितनी अच्छी तरह किया है। किसी काम को स्वीकार करने वाले के लिए आरम्भ से ही इस बात को समझना आवश्यक है कि उससे उसके भण्डारीपन होने का हिसाब मांगा जाएगा। निगरानी पर लगाए रखना इस जवाबदेही को याद कराने के लिए ही होना चाहिए।

मूल्यांकन करना

कलीसिया में अगुओं के द्वारा किए गए कार्यक्रमों का मूल्यांकन निरन्तर होता रहना चाहिए। यदि कोई कार्यक्रम आशा के अनुरूप नहीं चल रहा है, तो इस बात का पता लगाया जाना चाहिए कि यह क्यों नहीं चल रहा। क्या किसी समस्या को सुलझाया जा सकता है? क्या कोई ऐसा ढंग है जो इस स्थिति में कार्य ही न करे? बुद्धिमान अगुवे जानते हैं कि, यद्यपि मसीही लोगों के पास न बदलने वाला संदेश है, परन्तु उसे बताने के ढंग हमेशा बदलते रहते हैं। जो ढंग एक समय में काम करता है हो सकता है कि कहीं दूसरी जगह वह काम न करे। अगुओं को ढंग बदलने का समय पता होना चाहिए जिनसे कलीसिया अपने उद्देश्य को पूरा करने की खोज करती है।

सारांश

कलीसिया के प्रबन्धन के काम को कैसे परखा जाएगा? एक अर्थ में, इसकी परख वैसे ही होनी चाहिए जैसे व्यापार के प्रबन्धन का फैसला होता है अर्थात परिणामों से। एक व्यापारी अपने प्रबन्धकों से पूछता है, ''क्या 'निष्कर्ष निकला' है? क्या हमने कोई लाभ कमाया है?'' यदि कमाया, तो प्रबन्धन अच्छा है; यदि नहीं, तो प्रबन्धन में कमी है।

कलीसिया को उन लोगों से जो निगरानी का काम करते हैं, पूछना चाहिए, ''क्या लोगों ने उद्धार पाया? क्या उद्धार पाए हुए लोगों को समझाया गया? क्या इससे परमेश्वर की महिमा व स्तुति हुई?'' एक दूसरे अर्थ में, क्योंकि हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है, इसलिए कलीसिया पूछ सकती है, ''क्या अनीता मसीही बन गई, और क्या वह देह का एक आवश्यक अंग बनी है?''; ''क्या विशाल पिछले साल से अधिक विश्वासी मसीही हो गया है?''; ''क्या हमने सुनीता की समस्याओं के समाधान के लिए उसकी सहायता ऐसे की है कि वह आज प्रभु के निकट आ जाए?''

जिन्हें ज़िम्मेदारी सौंपी जाती है वे केवल कलीसिया के कार्य को अच्छे ढंग से करने पर ही ध्यान देते हैं। उनका ध्यान उनकी ओर भी होता है जो उनके साथ काम करते हैं। उन्हें पता होना चाहिए कि वे जिस काम को करने में लगे हुए हैं वह आत्मिक विकास के लिए एक अवसर है। उदाहरण के लिए, भूखों को भोजन खिलाने के कार्यक्रम से न केवल कुछ

लोगों के पेट ही भरने चाहिए, बल्कि यह एक साधन भी होना चाहिए जिससे मसीही लोग और मसीह के जैसे बन जाएं। यदि किसी कार्यक्रम का लीडर ''नौकर'' है, या यदि वह अपने साथ काम करने वालों का अपमान करता है, तो वह कार्यक्रम कलीसिया की सहायता के बजाय उसके लिए रुकावट बन सकता है।

जो लीडर कलीसिया के किसी कार्यक्रम की निगरानी करता है, चाहे वह किसी बाइबल स्कूल टीचर के साथ काम करता हो या चर्च बिल्डिंग साफ करने वाला हो उसे कलीसिया के अंतिम लक्ष्य को ध्यान में रखना चाहिए। यदि वह इस प्रकार से कार्य करता है जिससे बिना वजह किसी मसीही साथी को ठोकर लगती है और वह मसीह के निकट होने के बजाय उससे दूर हो जाता है, तो वह कार्य को सफलतापूर्वक *नहीं* कर रहा है।